Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Review Paper

विवेकानंद का मानव धर्मः एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण

डॉ. यशवंतराज

गेस्ट फैकल्टी विद्या संबल योजना राजकीय महाविद्यालय पीपाड़ शहर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *डॉ. यशवंतराज

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15878637

सारांश

इस लेख में विवेकानन्द के मानवतावादी दृष्टिकोण को ऐतिहासिक संदर्भ में उनके मानव धर्म, दरिद्रनारायण की अवधारणा और सेवा भाव के माध्यम से विश्लेषित किया गया है। उनकी सोच में आध्यात्मिक और ईश्वरीय विचारधारा भी समाहित रही। उन्होंने मानव सेवा को ईश्वर सेवा के समान माना। उनका विश्वास था कि सच्ची सेवा मानव सेवा है। प्रत्येक धर्म की सच्चाई केवल सत्य में निहित होती है। वे किसी ऐसे धर्म को नहीं मानते जो मानवता को प्राथमिकता न दे। उनका मानवतावादी दृष्टिकोण आधुनिक भारत की सामाजिक प्रगति का मुख्य आधार बना।

Manuscript Info.

✓ **ISSN No:** 2584- 184X
✓ **Received:** 21-05-2025
✓ **Accepted:** 10-06-2025
✓ **Published:** 27-06-2025
✓ **MRR:3(6):**2025;80-83
✓ **©2025, All Rights Reserved.**
✓ **Peer Review Process:** Yes
✓ **Plagiarism Checked:** Yes

How To Cite

डॉ. यशवंतराज. विवेकानंद का मानव धर्मः एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च एंड रिव्यू. 2025;3(6):80-83.

संकेताक्षः- मानववाद, मानवतावाद, मानवधर्म, रामकृष्ण परमहंस, अद्वैतवाद, वेदांत, आध्यात्मिक एकता।

प्रस्तावना

भारत के इतिहास में स्वामी विवेकानन्द का व्यक्तित्व और उनका कार्य मानववाद और मानवतावादी विचारों का स्पष्ट प्रतिनिधित्व करता है। वास्तव में मानववाद का तात्पर्य है मानव को कें द्र में रखकर विचार करना और उसे क्रियान्वित करना। यद्यपि भारतीय चिंतन परंपरा में वैदिक युग से ही मानव कें द्रित विचारधारा मिलती है, फिर भी आधुनिक युग में पैटार्क और बोकेशियों जैसे चिंतकों ने यूरोप में 15वीं-16वीं शताब्दी में मानववाद की स्थापना की। ईश्वर आधारित चिंतन के साथ-साथ मानवतावादी विचार भी विकसित हुए। स्वामी विवेकानन्द के मानव धर्म, सेवा और दरिद्रनारायण की अवधारणा में मानव कल्याण का स्पष्ट प्रतिबिंब मिलता है। उन्होंने वेदांत को व्यवहार में उतार कर मानव सेवा का नवाचारी मार्ग दिखाया।

विवेकानन्द के चिंतन में मानववाद की स्पष्टता मिलती है। वे मूल रूप से मानवतावादी विचारक थे। उनके अनुसार मनुष्य का जीवन ही धर्म है। धर्म न तो ग्रंथों में होता है और न ही केवल सिद्धांतों मेंकृहर व्यक्ति स्वयं अपने ईश्वर को अनुभव कर सकता है। उनके अनुसार "मेरा ईश्वर वही निर्धन व्यक्ति है जो दुखी और पीड़ित है।" उन्होंने दरिद्रनारायण की अवधारणा दी जिससे वंचितों की सेवा के लिए लोगों को प्रेरित किया जा सके। वे किसी भी विदेशी श्रेष्ठता को चुनौती देने वाले पहले भारतीय थे। उन्होंने आलोचकों के जवाब देने की बजाय अपने धर्म की आध्यात्मिक श्रेष्ठता को प्रस्तुत किया। विदेश से लौटकर उन्होंने बेलूर

© 2025 डॉ. यशवंतराज. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

और मायावती में दो प्रमुख केंद्र स्थापित किए। रामकृष्ण मिशन के सदस्य धार्मिक और सामाजिक सेवा के लिए संन्यासी रूप में कार्य करते थे। मिशन के अंतर्गत विद्यालय और जनकल्याण केंद्र खोले गए।

संकेताक्षः- मानववाद, मानवतावाद, मानवधर्म, रामकृष्ण परमहंस, अद्वैतवाद, वेदांत, आध्यात्मिक एकता।

मानववादी दर्शन की वैचारिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी, 1863 को कलकत्ता में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। उनके पिता न्यायालय में वकील थे और उनकी माता एक विदुषी महिला थीं जो हिन्दू धर्म में आस्था रखती थीं। माँ के गुणों का प्रभाव विवेकानन्द पर पड़ा। उनके पिता ने 25 वर्ष की आयु में संन्यास ले लिया था। विवेकानन्द पर सबसे गहरा असर श्री रामकृष्ण परमहंस से मिला शिष्यत्व था। इस महान संत से संपर्क पाकर नरेन्द्रनाथ दत्त, विवेकानन्द बन गए। विद्यालय में विवेकानन्द होशियार छात्र माने जाते थे। कॉलेज में वे एक प्रभावशाली वक्ता बने। उनकी स्मरण शक्ति बहुत तीव्र थी। ऐसा कहा जाता है कि उन्हें ब्रिटैनिका के ग्यारह खंड कंठस्थ थे। वे भारतीय संगीत में भी पारंगत थे और इस विषय पर उन्होंने एक शोध निबंध भी लिखा। वे पाश्चात्य विज्ञान और उदारवाद के संपर्क में आए। उन्होंने जे.एस. मिल, हीगल, कान्ट और हर्बर्ट स्पेन्सर के विचारों का अध्ययन किया और स्पेन्सर से पत्राचार भी किया। स्पेन्सर उनकी आलोचना से बहुत प्रभावित हुआ। उन्होंने ब्रह्म समाज से प्रेरणा लेकर धार्मिक साहित्य का गहन अध्ययन किया और इसके सदस्य भी बने। परंतु वे अंततः संशयवादी होने लगे। उनके मित्र बृजेन्द्रनाथ सील से उन्होंने शैली और वर्ड्स वर्थ पढ़ने की प्रेरणा ली, लेकिन साथ ही वे परम तत्व की खोज की ओर अग्रसर हुए। उनके विचारों में बुद्धिवाद, वेदांत, हेगेल का द्वंद्वात्मक तत्व और फ्रांसीसी क्रांति की भावना गूंजती थी। वे व्यक्तिगत सोच के बजाय सार्वभौमिक विवेक को महत्व देते थे। बाद में वे रामकृष्ण परमहंस के संपर्क में आए, जिससे उनका चिंतन ईश्वर की ओर मुड़ा। 1880 में, जब वे विश्वविद्यालय में पढ़ रहे थे, रामकृष्ण से उनकी पहली मुलाकात हुई। रामकृष्ण ने उन्हें दक्षिणेश्वर बुलाया और गाने को कहा। विवेकानन्द ने गाया और रामकृष्ण भावविभोर हो गए। उन्होंने विवेकानन्द से अकेले में संवाद किया लेकिन विवेकानन्द पहले दिन उनकी गहराई को समझ नहीं पाए। विवेकानन्द को बार-बार उनसे मिलने का मन होता था पर वे जिद पर अड़े रहते। उनके पिता की मृत्यु के बाद परिवार आर्थिक संकट में आ गया। विवेकानन्द ईश्वर से नाराज होने लगे। एक दिन फिर रामकृष्ण ने उन्हें बुलाया और माँ काली से वर मांगने को कहा। लेकिन जब वे माँ काली के मंदिर पहुँचे तो धन नहीं बल्कि ज्ञान और भक्ति का वर मांगा। यही अनुभव उनकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा को गहरा कर गया।

रामकृष्ण ने उन्हें कई बार स्पर्श करके समाधि का अनुभव कराया। एक बार उन्हें निर्विकल्प समाधि भी हुई। इस प्रकार उनकी साधना बढ़ती गई और 1886 में जब रामकृष्ण का देहावसान हुआ, वे उनके सबसे करीबी शिष्य बन चुके थे। इसके बाद विवेकानन्द ने चार साल भारत की यात्रा की। इन यात्राओं से उन्हें भारत की गरीबी, सामाजिक पिछड़ापन और सांस्कृतिक शक्ति का अनुभव हुआ। वे अलमोड़ा में रहकर संस्कृत का अध्ययन भी करते रहे। बाद में उन्होंने शिकागो धर्म संसद में भाग लेने का निर्णय किया। खेतड़ी के राजा अजीतसिंह ने उनके यात्रा खर्च की व्यवस्था की। शिकागो सम्मेलन उनके जीवन का स्वर्णिम अध्याय बन गया। उन्होंने वेदांत का आधुनिक अर्थ में संदेश दिया और भारतीय गौरव को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया। पश्चिम की वैज्ञानिक उन्नति ने उन्हें प्रभावित किया, लेकिन आत्मिक शून्यता ने उन्हें चिंतित भी किया। 1899 की दूसरी विदेश यात्रा ने उन्हें और भी अधिक पीड़ा दी।

उनके जीवन पर सबसे गहरा प्रभाव उनके गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस का था। उन्हीं की प्रेरणा से विवेकानन्द ने अपने विचारों और जीवन को आकार दिया। विद्वानों का मानना है कि अगर वे रामकृष्ण से न मिलते तो उनका जीवन कुछ और होता। स्वामी निखिलानन्द के अनुसार, रामकृष्ण ने उन्हें आत्मा, ईश्वर के अद्वैत रूप और सभी धर्मों में एकता की शिक्षा दी, और यही उन्हें आध्यात्मिक अनुशासन की ओर ले गया।

पुनर्लेखनः

श्री रामकृष्ण ने विवेकानन्द को सिखाया कि मानव मात्र की सेवा ही सच्चे अर्थों में ईश्वर की प्राप्ति है। उनके अनुसार मानव सेवा ही परम सत्य है और हर धर्म का यही सार है। आज जो भी धार्मिक मतभेद हैं, वे इस कारण हैं कि व्यक्ति धर्म को अपने पूरे जीवन में अपनाने के बजाय केवल बाहरी आडंबरों पर ध्यान देता है। विवेकानन्द ऐसे किसी धर्म को नहीं मानते जो मानवता को प्राथमिकता नहीं देता। उन्होंने कहा, ''वह धर्म कोई धर्म नहीं है जो विधवा के आँसू न पोंछे, अनाथ के मुख में अन्न का एक टुकड़ा न डाल सके।'' उन्होंने कहा, ''मुझे ऐसे ईश्वर पर विश्वास नहीं जो स्वर्ग का सुख तो देता है लेकिन इस धरती पर रोटी नहीं दे सकता। भारत को उठाना है, गरीबों को खाना देना है, शिक्षा फैलानी है और ढकोसलों का अंत करना है।''

उन्होंने कहा कि उन्हें अपनी मुक्ति की इच्छा नहीं है। सांसारिक सुख की उन्हें चाह कभी नहीं थी। उनका उद्देश्य केवल एक ऐसा यंत्र बनाना था जो मजबूत और उपयोगी हो और भारत में मानवता की भलाई के लिए काम कर सकेकृएक ऐसा यंत्र जिसे कोई भी शक्ति नष्ट न कर सके। उन्होंने इच्छा जताई कि वे बार-बार जन्म लें और दुःख झेलें, ताकि वे उस परमात्मा की सेवा कर सकें जो सभी प्राणियों में समाहित है। उनके लिए सबसे पूज्य वे ईश्वर थे जो दरिद्र, पीड़ित और तिरस्कृत रूप में हमारे बीच रहते हैं।

विवेकानन्द द्वारा प्रस्तुत मानववाद अत्यंत मानवीय और सार्वभौमिक है, लेकिन यह केवल मानवीय नहीं, बल्कि दिव्यता से जुड़ा हुआ है, जो सभी में सदा विद्यमान है। इसकी खासियत यह है कि यह अपनी शक्ति और सत्यता दिव्य चेतना से प्राप्त करता है। मनुष्य का ज्ञान और शक्ति या तो विनाशकारी हो सकते हैं या सृजनात्मक। यह जीवन, प्रेम और शांति दे सकते हैं या फिर मृत्यु, घृणा और दुख भी।

स्वामी विवेकानन्द का मानववाद इस विचार को पूरी तरह समर्थन देता है। एक व्यापक और सक्रिय मानवतावाद तथा विश्व शांति के लिए मनुष्य को अपने अंदर की पशु प्रवृत्तियों पर विजय पानी होगी। यह प्रक्रिया व्यक्ति को बौद्धिक से आध्यात्मिक स्तर तक ले जाती है। विवेकानन्द ने इसी को 'सच्चा धर्म' कहा-जो मनुष्य के भीतर छिपे दिव्य आत्मा के प्रकटीकरण का माध्यम है। हर मानव में जो अमर और शाश्वत आत्मा होती है, वही नैतिकता और मानवतावादी सोच का मूल आधार बन सकती है। जब मनुष्य इस आत्मा की अभिव्यक्ति करता है, तो वह सबके साथ एकता का अनुभव कर शांति और निर्भयता पाता है। यह धर्म किसी परंपरागत रूप या रूढ़िवादी विचार से अलग है। यह वेदांत पर आधारित एक नया धर्म है, जिसकी परिभाषा सभी धार्मिक संकीर्णताओं और आपसी वैर-भाव को मिटा सकती है। विवेकानन्द ने

© 2025 डॉ. यशवंतराज. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

कहा, ''ईश्वर को स्वयं से बाहर खोजना व्यर्थ है। हमारी आत्मा ही देवत्व का प्रतीक है। हम स्वयं ही एक मंदिर हैं।''

उनका मानववाद मनुष्य की असीम क्षमताओं में विश्वास करता है। उन्होंने धार्मिक विचारों के माध्यम से भारत सेवा का रास्ता दिखाया और अन्याय, भय तथा बुराइयों से लड़ते हुए आध्यात्मिक उत्थान का संदेश दिया। उनके विचारों ने भारतवासियों को बहुत प्रभावित किया। वे सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक असमानता के खिलाफ खड़े हुए। उन्होंने राजनीति पर सीधे चर्चा नहीं की, लेकिन उनके लेखन और भाषणों ने देशभक्ति की भावना को जागृत किया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने कहा था कि बंगाल में स्वामी विवेकानन्द आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन के आध्यात्मिक जनक हैं। उनका शुरू किया गया आध्यात्मिक जागरण ही राजनीतिक चेतना का आधार बना और राष्ट्र निर्माण की नींव बन गया। वेदांत का आत्मविश्वास और निर्भयता ही भारतीय राष्ट्रवाद की प्रेरणा बना।

इस प्रकार, विवेकानन्द का मानववाद सेवा-आधारित मानव धर्म को प्रेरित करने वाला रहा। यह मानववाद न केवल मानवीय था बल्कि सार्वभौमिक भी। इसमें सभी स्त्री-पुरुषों के लिए स्थान था। वे किसी ऐसे धर्म को नहीं मानते थे जो मानवता पर विश्वास न करे। उनके मानववाद में विश्व शांति और सार्वभौमिकता की भावना निहित थी। उन्होंने कहा कि सच्चा और क्रियाशील मानववाद तभी संभव है जब मनुष्य अपनी आंतरिक पशुता पर विजय पाकर आध्यात्मिक ऊँचाइयों तक पहुँचे। उनका विश्वास था कि मानव में असीम शक्ति है, और यही विश्वास आधुनिक भारत के समग्र विकास की नींव बना।पद

विवेकानंद के मानव धर्म के मुख्य सिद्धांतः

1. मानवता की सेवारू विवेकानंद के अनुसार, मानव धर्म का मुख्य उद्देश्य मानवता की सेवा करना है। उन्होंने कहा कि हमें अपने आसपास के लोगों की मदद करनी चाहिए और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाना चाहिए।
2. दीनदयाल नारायण की सेवारू विवेकानंद ने गरीबों और जरूरतमंदों को नारायण का रूप माना है। उनका कहना था कि मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है और हमें गरीबों और जरूरतमंदों की मदद करनी चाहिए।
3. सत्य और न्यायरू विवेकानंद के अनुसार, सत्य और न्याय मानव धर्म के मूल सिद्धांत हैं। उन्होंने कहा कि हमें हमेशा सत्य बोलना चाहिए और न्याय के लिए लड़ना चाहिए।

विवेकानंद के मानव धर्म का महत्वः

1. समाज में सकारात्मक परिवर्तनः विवेकानंद के मानव धर्म ने समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके विचारों ने लोगों को समाज सेवा के लिए प्रेरित किया और मानवता के प्रति जागरूकता बढ़ाई।
2. मानवता की सेवाः विवेकानंद के मानव धर्म ने मानवता की सेवा को एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बनाया है। उनके विचारों ने लोगों को गरीबों और जरूरतमंदों की मदद करने के लिए प्रेरित किया।
3. आधुनिक भारत की सामाजिक प्रगतिः विवेकानंद के मानव धर्म ने आधुनिक भारत की सामाजिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके विचारों ने लोगों को समाज सेवा के लिए प्रेरित किया और मानवता के प्रति जागरूकता बढ़ाई।

विवेकानंद के मानव धर्म की प्रासंगिकताः

विवेकानंद के मानव धर्म के सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं और हमें मानवता की सेवा और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करते हैं। उनके विचारों ने लोगों को समाज सेवा के लिए प्रेरित किया और मानवता के प्रति जागरूकता बढ़ाई। आज भी, विवेकानंद के मानव धर्म के सिद्धांत हमें मानवता की सेवा और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करते हैं।

स्वामी विवेकानंद के मानव धर्म का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विस्तार से विश्लेषण हैः

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः

- 19वीं सदी में भारत सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक संकट से गुजर रहा था।
- जातिवाद, छुआछूत, अंधविश्वास और पाखंड समाज में गहरे थे।
- अंग्रेजी शासन के कारण भारतीय संस्कृति और धर्म पर सवाल उठ रहे थे।

2. विवेकानंद की सोचः

- उन्होंने मानव धर्म को सबसे ऊपर रखा - धर्म का असली उद्देश्य मानवता की सेवा है।
- "नर सेवा ही नारायण सेवा" - हर इंसान में ईश्वर का वास मानना।
- उन्होंने जाति, धर्म, लिंग, भाषा आदि के भेदभाव को नकारा।

3. व्यावहारिक वेदांतः

- वेदांत के सिद्धांतों को जीवन में उतारना और दूसरों की सेवा करना।
- उन्होंने कहा कि पूजा-पाठ से ज्यादा जरूरी है - भूखे को खाना, गरीब को शिक्षा देना।
- रामकृष्ण मिशन की स्थापना इसी उद्देश्य से की गई।

4. शिकागो धर्म संसद (1893)ः

- विवेकानंद ने भारत की ओर से विश्व को "सर्व धर्म समभाव" और "वसुधैव कुटुम्बकम" का संदेश दिया।
- उन्होंने बताया कि सभी धर्म एक ही सत्य की ओर ले जाते हैं।

5. सामाजिक सुधारः

- उन्होंने महिलाओं की शिक्षा, दलितों के अधिकार, और समाज में समानता पर जोर दिया।
- उनका मानना था कि जब तक समाज के सबसे कमजोर वर्ग का उत्थान नहीं होगा, तब तक देश आगे नहीं बढ़ सकता।

6. वैश्विक प्रभावः

- विवेकानंद के विचारों ने न सिर्फ भारत, बल्कि पूरे विश्व में मानवता, सहिष्णुता और भाईचारे की भावना को मजबूत किया।
- उन्होंने युवाओं को प्रेरित किया कि वे सेवा और परोपकार को अपना धर्म बनाएं।

© 2025 डॉ. यशवंतराज. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

7. विवेकानंद ने मानव धर्म को आत्मानुभूति और वेदांत के व्यावहारिक रूप से जोड़ाकृहर इंसान में दिव्यता है और सभी में एकता है।

8. उन्होंने "जीव ही शिव है" का संदेश दिया, यानी हर जीव में भगवान का वास है, इसलिए मानव सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है।

9. वे सामाजिक कुरीतियों जैसे गरीबी, छुआछूत, अशिक्षा, और धार्मिक भेदभाव के खिलाफ थे और इन्हें दूर करने के लिए शिक्षा, सेवा और आत्म-विश्वास पर जोर दिया।

10. रामकृष्ण मिशन की स्थापना का उद्देश्य - धार्मिक एकता, सहिष्णुता, और मानव सेवा को बढ़ावा देना था। मिशन ने शिक्षा, स्वास्थ्य, और आपदा राहत में बड़ा योगदान दिया।

11. शिकागो धर्म संसद (1893) में उन्होंने विश्व बंधुत्व, धार्मिक सहिष्णुता और सभी धर्मों की समानता का संदेश दिया।

12. विवेकानंद ने भारतीय समाज को आत्म-गौरव, सामाजिक सुधार और मानवता के मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

13. उनका मानना था - "मानवता की सेवा ही सच्चा धर्म है" और यही भारत के पुनर्जागरण का आधार बना।

संदर्भ

1. विवेकानन्द. *विवेकानन्द साहित्य.* प्रथम खंड. कलकत्ता: अद्वैत आश्रम; 2000.
2. विवेकानन्द. *विवेकानन्द साहित्य.* प्रथम खण्ड. कलकत्ता: अद्वैत आश्रम; 2000. ज-द.
3. अग्निहोत्री VK. *भारतीय इतिहास.* नई दिल्ली: एलॉइड पब्लिशर्स प्रा. लि.; 2007. पृ. 152.
4. Rolland R. *The Life of Ramakrishna*. कलकत्ता: अद्वैत आश्रम; 1965. पृ. 222.
5. Eastern and Western Disciples. *The Life of Swami Vivekananda*. खण्ड 2. अल्मोड़ा: अद्वैत आश्रम; पृ. 893.
6. Rolland R. *The Life of Ramakrishna*. कलकत्ता: अद्वैत आश्रम; 1965. पृ. 223.
7. नरवणे VS. *Modern Indian Thought*. पृ. 83; साथ ही देखिए: Rolland R. पृ. 225.
8. Rolland R. *The Life of Ramakrishna*. पृ. 226.
9. नरवणे VS. *Modern Indian Thought*. पृ. 84.
10. नरवणे VS. *Modern Indian Thought*. पृ. 86.
11. लाल बसन्तकुमार. *समकालीन भारतीय दर्शन.* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास; 2001. पृ. 2-5.
12. Nikhilananda S. *Vivekananda: A Biography*. पृ. 53.
13. विवेकानन्द. *विवेकानन्द साहित्य.* खण्ड 5. मायावती: अद्वैत आश्रम; 1989. पृ. 313.
14. विवेकानन्द. *विवेकानन्द साहित्य.* खण्ड 6. मायावती: अद्वैत आश्रम; 1989. पृ. 344.
15. उपरोक्त संदर्भ: खंड 6, पृ. 345.
16. Vivekananda. *The Complete Works of Swami Vivekananda*. Volume 5. मायावती मेमोरियल संस्करण. कलकत्ता: अद्वैत आश्रम; 1964. पृ. 409.
17. Bharathi KS. *The Political Thought of Vivekananda*. In: *Encyclopaedia of Eminent Thinkers*. Volume 8. नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी; 1998. पृ. 54.
18. Singh K. *भारतीय राष्ट्रीयता का अग्रदूत.* Volume 4. जयपुर: ग्रंथ विकास; 1999. पृ. 59अ.
19. Bose SC. *The Indian Struggle*. कलकत्ता: Thacker and Spink; 1948.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 डॉ. यशवंतराज. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/